ResearchNext International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 2, April-June 2026 ISSN (O)- 3107-9725

Email id: editor@researchnextjournal.com Website- www.researchnextjournal.com

हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाओं में भाषा एवं शिल्प

बालिका कांबळे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा, लातूर (महाराष्ट्र)

Article Info: *(Recieved- 09/01/2026, Accept- 18/02/2026, Published- 03/04/2026)*

DOI- 10.64127/rnimj.2026v2i2004

सारांशः हिन्दी साहित्य में आत्मकथा विधा उत्तम विधा मानी गयी है। पुरुष आत्मकथाओं की अपेक्षा महिला आत्मकथाओं को अधिक लोकप्रियता प्रदान की गयी है इसका कारण यह है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिाक संघर्षशील जीवन गुजारती हैं। प्रायः यह आदिकाल से देखा गया है कि महिलाओं की भाषा अत्यंत सरल, सीधी, मनमोहक तथा मधुर होती है इसीलिए महिलाओं को मनमोहिनी की संज्ञा प्रदान की गयी है। जब दिन भर का पुरुष थका–हारा अपने नीड़ में प्रवेश करता है, तब नारी उसके स्वागत में अपनी बाहें बिछा देती है जिससे पुरुष अपनी दिनभर की थकान भूलकर नारी के आगोश में समाकर अकथनीय सुख की अनुभूति करता है। नारी के इस प्रेम समाकर अकथनीय सुख की अनुभूति करता है। नारी के इस प्रेम में आत्मतत्व की मात्रा अधिक पायी जाती है और जब यह आत्मतत्व शब्दों के माध्यम से प्रस्फुटित होता है तब आत्मकथा की निर्मिति होती है। साहित्य की किसी भी विधा में भाषा–शिल्प का होना अत्यंत आवश्यक है। अनुचित एवं अयोग्य भाषा–शिल्प रचना को भी अयोग्य कर देता है। कहावत है कि 'फलां जब बोलता है तब मानों फूल झरते हैं'। इससे यह सिद्ध होता है कि भाषा ही व्यक्ति को संसार में पर्वत से भी ऊँचे स्थान पर आसीन कर देती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में महिला आत्मकथा भाषा–शिल्प के कारण ही आज शीर्ष स्थान पर विराजमान हैं।

बीज शब्दः महिला, आत्मकथा, भाषा–शिल्प, विद्या, लोकप्रियता, संघर्षशील, पुरुष, आदिकाल, सरल, मनमोहक, मधुर, नीड़, मोहिनी, प्रवेश, बाहें, बिछा, प्रेम, आत्मतत्व, प्रस्फुटित, अयोग्य, उचित तथा अनुचित आदि।

प्रस्तावनाः हिन्दी आत्मकथा लेखिकाओं ने अपने आत्मकथा लेखन में पारम्परिक आत्मकथा लेखन से परे हटकर नारी चेतना तथा संघर्ष एवं आत्म स्वीकृति आदि के नये आयाम प्रस्तुत किये हैं। महिला लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में बिना किसी लाग–लपेट के निर्भीकता के साथ जीवंत एवं सपाट भाषा का प्रयोग किया है। यदि भाषा में बनावटीपन नहीं होता है तो वह निर्भीकता के साथ भावाभिव्यक्ति को व्यक्त करती है। हिन्दी लेखिकाओं अपनी आत्मकथाओं में प्रेम, अनैतिक सम्बन्ध, शारीरिक शोषण तथा दाम्पत्य जीवन की असफलताओं आदि तत्वों को प्रस्तुत करने में किसी भी प्रकार की गोपनीयता नहीं दिखती है।

विश्लेषण : साहित्यिक विद्वत् जनों का मत है कि जिस प्रकार विरह की अवस्था तीव्र होने पर प्रेम की लहरें उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार सांसारिक संघर्षों के कारण नारी मन में समुद्र जैसे ज्वार–भाटा की अपार तरंगें उमड़ती हैं तब आत्मकथा रूपी विधा का प्रादुर्भाव होता है। विरह अवस्था का एक दृश्य इस प्रकार है–

''ऊधौ विरही प्रेमु करै।
बिरह–बिथा की कथा अकथ अथाह महा,
कहत बनै न जो प्रवीन क सुकबीनि सों,
कहै रत्नाकर बुझावन लगे ज्यों कान्ह,
ऊधौ को कहन हेत ब्रज जबतीनि सों।''[1]

प्रकृति ने वैश्विक व्यवस्था का सुचारु रूप से संचालन गतिमान रखने के उद्देश्य से ही नर–नारी का निर्माण किया है। नर–नारी के बिना विश्व की निरन्तरता, विकास तथा अगली पीढ़ी की निर्मिति सम्भव नहीं है। नर–नारी के अभाव में विश्व, परिवार तथा मानव जीवन अपूर्ण है। उसी प्रकार साहित्य के बिना भी मानव जीवन असभ्य है।

हिन्दी आत्मकथा का आधुनिक युग में अत्यन्त महत्व है। हिन्दी साहित्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती को आत्मकथा प्रवर्त्तक के रूप में जाना जाता है। आत्मकथा साहित्य का इतिहास तीन युगों में विभाजित है।

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती युग (सन् 1875 ई. से 1931 ई. तक)
2. प्रेमचन्द युग (सन् 1932 ई. से 1947 ई. तक)
3. स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1947 ई. से वर्तमान तक)।''[2]

रमणिका जी का अपनी 'हादसे' आत्मकथा में राजनीति को लेकर तीखी आलोचना की गयी है। रमणिका गुप्ता राजनीतिज्ञ लोगों के बनावटी मुखौटों से अत्यंत परिचित हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा–शैली में हमें तीखापन दृष्टिगोचर होता है। यथा–

''नेताओं के यहाँ औरतों को फुसलाने और फँसाने के लिए विधिवत् दलाल होते हैं जो केवल औरतों को डिमारेलाइज और हतोत्साहित करने में माहिर होते हैं, ताकि राजनीति में आई स्त्रियाँ इनकी शर्तों पर जीने को विवश हो जायें।''[3]

भाषा–शिल्प की बानगी देखते ही बनती है। यथा–

''जो गारन्टी दे वह शासक हो जाता है और जो न दे वह डिस्पैचर।
जेल तो बीसवीं सदी का तीर्थ है।
छुरी काँटे का समाजवाद सरासर धोखा है।
झूठ बोलने की सबसे सुरक्षित जगह न्यायालय है।
हर आदमी एक जोड़ी जूता है आदि।''[4]

मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भण्डारी तथा राजेन्द्र याद जी के विश्रृंखलित दाम्पत्यसूत्र की व्यथा–कथा का वर्णन हुआ है। भण्डारी जी ने इस तथ्य को भी स्पष्ट किया है कि पुरुष व्यवहार में कुछ और तथा सिद्धान्तों के रूप में कुछ और होता है। इस सन्दर्भ में एक दृष्टांत इस प्रकार है। जैसे–

पत्नी को एक नर्स की भांति होना चाहिए जो सिर्फ पति के सेवा करें बदले में उससे अपेक्षा कुछ न करें।

इसके आगे वह कहती हैं– ''स्त्री विमर्श का झण्डा उठाने वाले.... गला फाड़–फाड़कर उन्हें बराबरी का दर्जा देने की पैरवी करने वाले पुरुषों का असली रूप यह...।''[5]

मन्नू भण्डारी जी की आत्मकथा एक कहानी यह भी में भाषा–शिल्प की बानगी देखते ही बनती है। शब्द रचना का चयन अपने अनूठेपन को सिद्ध करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी आत्मकथा 'कस्तूरी कुण्डल बसै' में स्त्री शिक्षा पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है। शिक्षा के माध्यम से संसार का कोई भी प्राणी अपने अस्तित्व को यथोचित रूप से ज्ञात कर सकता है। वह अधिकारों के विषय में सही गलत का निर्णय ले सकता है। विशेषकर नारी द्वारा शिक्षा ग्रहण करने से उसकी स्वयं की समस्याएँ किसी हद तक स्वतः हल हो जाती हैं। भाषा–शिल्प की श्रेष्ठता मैत्रेयी पुष्पा के इस कथन से स्पष्ट होती है।

''पढ़–लिखकर आदमी ज्ञान की उस दुनिया में पहुँच सकता है जहां वह अपने आपको देख सके कि दुनिया में उसकी तस्वीर क्या है? बिना पढ़े मनुष्य का जीवन गधे जैसा होता है। कस्तूरी धीरे–धीरे ही सही, बांच तो लेती है... स्त्रियाँ बुद्धि विद्या में आगे रहती है।''[6]

'अन्या से अनन्या' आत्मकथा में प्रभा खेतान जी ने अपने निजी जीवन का वास्तविक चित्रण किया है। इतना ही नहीं इसे हम इस प्रकार भी व्यक्त कर सकते हैं कि प्रभा जी ने अपने जीवन का नग्न यथार्थ 'अन्या से अनन्या' में चित्रित किया है। कुछ लोगों ने इस आत्मकथा के संदर्भ भद्दी फब्तियाँ भी कसी हैं उनका कथन है कि इस रचना में एकबेशर्म और निर्लज्ज नारी ने स्वयं चौराहे पर खुद को नंगी स्थिति में प्रस्तुत किया है। भाषा की दृष्टि से इसमें कुछ अटपटे शब्दों का प्रयोग हुआ परन्तु इससे रचना की सारगर्भिता में किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ा है।

इस आत्मकथा में पितृसत्तात्मक समाज से मुक्ति पाने का प्रयास भी हुआ है। प्रभा खेतान जी का कथन इस प्रकार है–

''औरत के लिए केवल प्यार ही काफी नहीं बल्कि बनने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए। धन–मान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सभी कुछ। जीवन शुरू करने के लिए उसे पुरुष के बराबर जमीन चाहिए तथा इस जमीन को समाज से छीनकर लेना पड़ता है, महज अनुनय–विनय से काम नहीं चलता।''[7]

किसी भी साहित्य में भाषा–शिल्प का महत्व सबसे अधिक होता है। रचनाकार अनुभूतियों एवं मनोभावों को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है। इस प्रक्रिया में वह भाषा–शिल्प, उपादानों, प्रक्रिया, ढंग तथा कौशल से अनुभूतियों को चित्रित करता है। शिल्प अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ ही साथ रचना में सौन्दर्य निर्माण तथा अलंकृति एवं परिमार्जित करने का भी कार्य करता है। साहित्य में शिल्प के माध्यम से ही कला पक्ष प्रभावी होता है। यही कारण है कि साहित्य में विशेषतया आत्मकथा साहित्य में शिल्प द्वारा ही कला पक्ष सुदृढ़, प्रभावी तथा सम्प्रेषणीय बनता है। शिल्प अभिव्यक्ति व्यक्त करने का कलात्मक ढंग, कौशल तथा प्रक्रिया आदि है। आत्मकथा लेखन में भाषा–शिल्प का अत्यधिक महत्व है।

निष्कर्ष: महिला आत्मकथाओं की विशेषता यह है कि इनकी भाषा निर्भीक तथा शिल्प संवादात्मक शैली एवं काव्यात्मकता से परिपूर्ण होती है। महिला आत्मकथाओं की पृष्ठभूमि स्त्री–चेतना, संघर्ष तथा आत्म शोध से परिपूर्ण होती है। आत्मकथा विधा में 'मैं' शैली का प्रयोग किया जाता है। पाठक से सीधे संवाद स्थापित करने में यह शैली उत्तम मानी गयी है। महिला आत्मकथा लेखिकाएँ दैनिक जीवन में घटित घटनाओं को ईमानदारी से प्रस्तुत करती हैं क्योंकि आत्मकथा लेखन की गरिमा के लिए यह आवश्यक तत्व है। महिला आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथाओं में भारतीय समाज का गहनता से चित्रण किया है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. आधुनिक विरह काव्य, डॉ. राम प्रसाद मिश्र, पृ. 61, संस्करण 1990, भारतीय ग्रंथ निकेतन
2. महिला आत्मकथा लेखन में नारी– डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई, पृ. 36, संस्करण 2012, ए.बी.एस. पब्लिकेशन वाराणसी।
3. वही, पृ. 110।
4. हिन्दी कविता भाषा और शिल्प विविध प्रतिमान– डॉ. करुणा उमरे, पृ. 154–155, संस्करण 2012, अमन प्रकाशन, कानपुर।
5. एक कहानी यह भी– मन्नू भण्डारी, पृ. 88, संस्करण 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
6. समकालीन महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं में नारी विमर्श– डॉ. आंचल कुमारी, पृ. 84, संस्करण 2023, वान्या पब्लिकेशंस कानपुर।
7. 21वीं सदी के स्त्री हिन्दी आत्मकथा साहित्य– डॉ. प्रीति दुबे, पृ. 63, संस्करण 2026, वान्या पब्लिकेशंस कानपुर।

Cite this Article

"बालिका कांबळे", "हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाओं में भाषा एवं शिल्प", ResearchNext International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9725 (Online), Volume:2, Issue:2, April-June 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."